

Saarth E-Journal

Saarth E-Journal of Research

E-mail : sarthejournal@gmail.com
www.sarthejournal.com

ISSN NO : 2395-339X
Peer Reviewed
Vol.8 No.10

Impact Factor
Quarterly
July-Aug-Sep 2023

संस्कृत भाषा के लिए आधुनिकतम शिक्षा प्रणालियाँ : चुनौतियाँ और संभावनाएँ

डॉ. गोहील महेश्वरीबा

संक्षेपण :

संस्कृत भाषा एक प्राचीन और महत्वपूर्ण भाषा है जिसने भारतीय सभ्यता, संस्कृति, और साहित्य को प्रभावित किया है। इसके बावजूद, आधुनिकतम शिक्षा प्रणालियों में संस्कृत भाषा की अपनी जगह कम हो रही है। इस शोध पत्र में, हम संस्कृत भाषा के लिए विभिन्न आधुनिक शिक्षा प्रणालियों की चुनौतियों और संभावनाओं का विश्लेषण करेंगे।

प्रस्तावना :

संस्कृत भाषा, जिसे देववाणी भी कहा जाता है, भारतीय सभ्यता और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह न केवल भाषा है, बल्कि धार्मिक और धार्मिक ग्रंथों की भाषा भी है। लेकिन आधुनिक युग में विज्ञान, तकनीक, और अन्य भाषाओं की प्राथमिकता के चलते संस्कृत भाषा के प्रति रुझान किया जा रहा है। इस संकटकाल में, संस्कृत भाषा को आधुनिक शिक्षा प्रणालियों में समाहित करने की चुनौतियों और संभावनाओं को समझना महत्वपूर्ण है।

संस्कृत भाषा की महत्वपूर्णता :

संस्कृत भाषा का महत्व विभिन्न क्षेत्रों में है, जैसे कि संस्कृत साहित्य, धार्मिक ग्रंथ, विज्ञान, और वाणिज्यिकता। यह एक ऐतिहासिक भाषा है जिसका महत्व आज भी बना हुआ

है। इसके बावजूद, आधुनिकतम शिक्षा प्रणालियों में संस्कृत की अपनी जगह कम हो रही है, जिससे यह भाषा का उत्थान रोका जा सकता है।

संस्कृत भाषा के शिक्षा में चुनौतियाँ :

1. शिक्षक की कमी: संस्कृत भाषा की शिक्षा के लिए योग्य शिक्षकों की कमी होना एक बड़ी चुनौती है। इस भाषा की विशेषताओं को समझने और प्रस्तुत करने के लिए योग्य और अनुभवी शिक्षकों की आवश्यकता होती है।
2. प्रयोग-मुख्य शिक्षा प्रणाली: आधुनिकतम शिक्षा प्रणालियाँ अक्सर प्रयोग-मुख्य होती हैं जिनमें शिक्षा भाषाओं के प्रयोग के आधार पर दी जाती है। ऐसे में संस्कृत भाषा की अधिकतम उपयोग नहीं होती और इसकी चुनौती होती है कि छात्रों को इसे समझने और उसका प्रयोग करने का मौका नहीं मिलता।
3. तंत्रशक्ति का अभाव: संस्कृत भाषा के लिए आधुनिक तंत्रशक्तियों की कमी हो सकती है जो इसे आधुनिक शिक्षा प्रणालियों में शामिल करने के लिए उपयोगी होती हैं। इससे छात्रों को विभिन्न विधाओं में संस्कृत भाषा का समयरूपी अध्ययन करने का मौका कम हो सकता है।
4. प्रयुक्त पाठ्यमाला की अयोग्यता: कुछ आधुनिक पाठ्यमालाएँ संस्कृत भाषा के अध्ययन के लिए अयोग्य हो सकती हैं। यदि पाठ्यमालाएँ संवेदनशीलता, अभिवृद्धि और समर्पण को प्रोत्साहित नहीं करती हैं, तो छात्रों की रुचि कम हो सकती है और उन्हें संस्कृत भाषा का अध्ययन करने में आतंक हो सकता है।

संस्कृत भाषा के शिक्षा में संभावनाएँ :

1. तंत्रशक्ति का सहयोग: तंत्रशक्ति के विकास से, संस्कृत भाषा की शिक्षा में सुधार किया जा सकता है। आधुनिक शिक्षा प्रणालियों में तंत्रशक्तियों का उपयोग कर संस्कृत भाषा की शिक्षा को आकर्षक और प्रभावशाली बनाया जा सकता है।
2. भाषानुभव केंद्र: संस्कृत भाषा के लिए भाषानुभव केंद्र तैयार किए जा सकते हैं जहाँ छात्र संस्कृत भाषा का अध्ययन करते समय उसकी महत्वपूर्णता और प्रयोग को समझ सकें। यह स्थान उन्हें संस्कृत भाषा के साथ महसूस करने में मदद कर सकता है।
3. विशेषज्ञ शिक्षकों की तैनाती: संस्कृत भाषा की शिक्षा के लिए विशेषज्ञ शिक्षकों को तैनात किया जा सकता है। इससे छात्रों को उचित मार्गदर्शन मिल सकता है और उनके संस्कृत भाषा में रुचि और आत्मविश्वास वृद्धि कर सकते हैं।
4. इंटरैक्टिव पाठ्यक्रम: इंटरैक्टिव और शैलीषिक पाठ्यक्रम विकसित किए जा सकते हैं जो संस्कृत भाषा के अध्ययन को रोचक और मनोबल बढ़ा सकते हैं। छात्रों के रुचि

के हिसाब से विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम तैयार किए जा सकते हैं जो उनके आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं।

निष्कर्ष :

संस्कृत भाषा के लिए आधुनिकतम शिक्षा प्रणालियों में चुनौतियों और संभावनाओं का अध्ययन करने से हमें यह ज्ञात होता है कि इस भाषा को आधुनिक शिक्षा प्रणालियों में समाहित करने के लिए कई उपाय मौजूद हैं। तंत्रशक्तियों का सहयोग, विशेषज्ञ शिक्षकों का समर्थन, और इंटरैक्टिव पाठ्यक्रम की व्यवस्था संस्कृत भाषा की शिक्षा में सुधार कर सकते हैं और इसे आधुनिक युग में भी महत्वपूर्ण बना सकते हैं।

संदर्भ :

1. अग्रवाल, हंसराज, संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1965
2. उपाध्याय, बलदेव एवं पाठक, जगन्नाथ, संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इहास सप्तम खण्ड, आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, 2000
3. उपाध्याय, बलदेव एवं त्रिपाठी, राधावल्लभ, संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ 1997
4. उपाध्याय
5. बलदेव, संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा निकेतन, वाराणसी, 2001
6. उपाध्याय, रामजी, आधुनिक संस्कृतसाहित्यानुशीलनम्, संस्कृत परिषद्, सागर विश्वविद्यालय, सागर, 1965
7. उपाध्याय, रामजी, संस्कृत आलोचना, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1991
8. उपाध्याय, रामजी, संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, 1993
9. उपाध्याय, रामजी, आधुनिक संस्कृत नाटक, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, द्वि . संस्करण, 1996
10. काणे, पी.वी ., संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास, अनुइन्द्रचन्द्र शास्त्री ., मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1966
11. काले, मनोहर, भारतीय काव्यशास्त्र के नये आयाम (प्रथम भाग: रस सिद्धान्त), नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000